UGC CARE LISTED
ISSN No.2394-5990

संशोधक

• वर्ष : ९२ • मार्च २०२४ • पुरवणी विशेषांक ५३

उत्सव

प्रकाशक : इतिहासाचार्य वि.का.राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे

UGC CARE LISTED
ISSN No. 2394-5990

इतिहासाचार्य वि. का. राजवाडे मंडळ, धुळे
या संस्थेचे त्रैमासिक

।। संशोधक।।

पुरवणी अंक ५३ – मार्च २०२४ (त्रैमासिक)

- शके १९४५
- वर्ष : ९२
- पुरवणी अंक : ५३

संपादक मंडळ

- प्राचार्य डॉ. सर्जेराव भामरे
- प्रा. डॉ. मृदुला वर्मा
- प्राचार्य डॉ. अनिल माणिक बैसाणे
- प्रा. श्रीपाद नांदेडकर

अतिथी संपादक

- डॉ. सुजितसिंह परिहार
- प्रा. सूर्यकांत चोरघडे

*** प्रकाशक ***

श्री. संजय मुंदडा

कार्याध्यक्ष, इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे ४२४००१
दूरध्वनी (०२५६२) २३३८४८, ९४२२२८९४७१, ९४०४५७७०२०

Email ID : rajwademandaldhule1@gmail.com
rajwademandaldhule2@gmail.com

कार्यालयीन वेळ

सकाळी ९.३० ते १.००, सायंकाळी ४.३० ते ८.०० (रविवारी सुट्टी)

सदस्यता वर्गणी : रु. २५००/-

विशेष सूचना : संशोधक त्रैमासिकाची वर्गणी चेक/ड्राफ्टने 'संशोधक त्रैमासिक राजवाडे मंडळ, धुळे' या नावाने पाठवावी.

अक्षरजुळणी : सौ. सीमा शिंत्रे, पुणे.

टीप : या नियतकालिकेतील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.

41. **हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श**

- प्रा.डॉ.उपाध्य भारत बाबुराव ---------- 147

42. **हिन्दी उपन्यास साहित्य में किन्नर विमर्श**

- डॉ. सुनिलकुमार पी. बारीआ ---------- 150

43. **हिंदी उपन्यास में किन्नर विमर्श का अनुशीलन**

- 1) डॉ. सुषमा गौड़ियाल, 2) भुवनेश कुमार ---------- 153

44. **समाज में तृतीय लिंग का योगदान**

- 1) डॉ पूर्णिमा श्रीनिवासन, 2) डी श्रीदेवी ---------- 156

45. **पौराणिक महाकाव्य महाभारत और किन्नर विमर्श**

- डॉ. सुजितसिंह शि. परिहार ---------- 159

46. **किन्नर की मानसिक पीड़ा का चित्रण 'संज्ञा' कहानी के विशेष संदर्भ में**

- डॉ. संगीता पांडुरंग लोमटे ---------- 163

47. **किन्नरों का शिक्षा क्षेत्र में बढते कदम : अस्तित्व और आत्मनिर्भरता का सवाल**

- डॉ. मीना खरात ---------- 167

48. **कुसुम अंसल की धूएं की ईमानदारी कहनी में किन्नर विमर्श**

- डॉ. सुनील एम. पाटिल ---------- 169

49. **वर्तमान हिंदी कविता में किन्नर जीवन**

- डॉ. ज़हीरुद्दिन रफियोद्दिन पठाण ---------- 172

▲▲▲

समाज में तृतीय लिंग का योगदान

1) डॉ पूर्णिमा श्रीनिवासन
शोध निर्देशिका,
वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस,
टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड स्टडीज,
पल्लावरम, चेन्नई.

2) डी श्रीदेवी
शोधार्थी,
वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस,
टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड स्टडीज,
पल्लावरम, चेन्नई. 9952951435
sridevipalani21@gmail.com

शोध सार :

ईश्वर के निर्माता में सभी समान है। हर किसी में कुछ न कुछ विशेषता रहता है। इस समाज दलित, वृद्ध, प्रवासी, आदिवासी, स्त्री, किन्नर को उपेक्षित करता है। उनके दर्द, पीड़ा, मानसिक वेदना को अवधान करनेवाला कोई नहीं हैं। समकालीन साहित्य में दलित, प्रवासी, वृद्ध, स्त्री, आदिवासी, विमर्श होने के परिणाम स्वरूप इन समस्याओं चर्चा का विषय बना रही है और उनकी समस्याओं का समाधान भी सामना हो रहा है। लेकिन आज तक समाज में किन्नर वर्ग अपने अस्मिता की पहचान के लिए निरंतर संघर्षरत है। सरकार और गैर सरकार, तृतीय लिंग के कल्याण के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास रोजगार की व्यवस्था करे तो ही तृतीय लिंग समुदाय के लोग समाज की मुख्यधारा के अंतर्गत लाया जा सकता है।

''कहते विकलांग उसे। जिनका अंग भंग हो जाता,
मिलता यह दर्जा मुझको तो, क्यों मैं स्वांग रचाता।
घिन करता इस तन से हरपल, मन से भी लड़ता हूँ
कोई नहीं जो कहे तेरा, मैं दर्द समझता हूँ
है तन अधुरा मन अधूरा, ना कुछ मुझमें पूरा
ताली गाली लगाती, फिर भी जलता इससे चूल्हा।
जितना श्रापित मेरा जीवन, दुखद आदिक मर जाना,
जूते चप्पल मार लाश को, कहते लौट न आना।''[1]

ईश्वर की हर रचना में एक विशिष्ट विशेषता होती है। मनुष्य, ईश्वर की सर्वोत्तम रचना है। मनुष्य दो लिंग के होते है - नर और नारी। लेकिन इनके अलावा हमारे समाज में एक और मानव लिंग भी है, उसे नपुंसक लिंग कहते हैं। समाज में इन्हें किन्नर, हिजड़ा, उभयलिंग, छक्का, तृतीय लिंग, शिखंडी आदि नामों से पुकारते हैं। हमारे समाज में तृतीय लिंग समुदाय मानव होने के बावजूद भी निचले दर्जे का जीवन जीने के लिए मजबूर होते है। हमारा समाज एक ओर सामाजिक रूढ़ियों से बंधा है, तो दूसरी ओर असाधारण परिवर्तन को भी अपना लेते है।

मूल शोध आलेख :

तृतीय लिंग की उत्पत्ति ब्रम्हा की छाया या उनके पैर के अंगूठे से उत्पन्न मानते है। कुछ ग्रंथों में तृतीय लिंग की उत्पत्ति को अरिष्टा और कश्यप के आदिजनक मानते है। ''डी.सी. सरकार वायु पुराण के हवाले से लिखते है किंपुरुष-किन्नर भी आदिम जातियाँ थी जो हेमकूट के निवास करती थी''[2]

पैराणिक ग्रंथों में तृतीय लिंग :

बौद्ध और जैन साहित्य में तृतीय लिंग समुदाय का विस्तार वर्णन मिलता है। 'कामसूत्र' में तृतीय लिंग को तृतीय प्रकृति का नाम दिया गया है। महाभारत जैसे प्रसिद्ध महाकाव्य में शिखंडी नामक तृतीय लिंग ही पितामह भीष्म की मृत्यु का कारण बनी। महाभारत में एक ओर धनुर्धीर अर्जुन ने अज्ञानवास में 'बृहन्नला' नामक तृतीय लिंग का भेष धारण किया। आज भी गुजरात में तृतीय लिंग लोग अर्जुन को बृहन्नला के रूप में पूजा करते हैं। महाभारत युद्ध में पांडवों को अपनी जीत के लिए काली देवी को नरबलि देना की आवश्यकता थी। तब अर्जुन के पुत्र अरवान स्वयं नरबलि का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। किंतु अरवान ने बलि से पहले शादी करने की शर्त रखी। तब भगवान श्रीकृष्ण ने मोहिनी रूप में अरवान से शादी रचाया। अगले दिन अरवान स्वच्छा से काली देवी को अपने नरबलि देता है। आज भी दक्षिण भारत में तृतीय लिंग अरवान को भगवान मानकर पूजा करते हैं। तमिलनाडु में सबसे प्राचीन और ऐतिहासिक मंदिर विल्लुपुरम जिले के कूवागम गांव में प्रसिद्ध 'कूथान्दवर मंदिर' है।

पौराणिक ग्रंथ रामायण में भगवान श्रीराम चंद्रमूर्ति अपने पिताजी की आज्ञा पालन करने के लिए वनवास गए। राम को वापस अयोध्या ले आने के लिये भरत, अयोध्यावासी सभी चित्रकूट आए। लेकिन राम ने अयोध्या वासियों को वापस जाने के लिए आदेश दिया। राम से कोई आदेश न मिलने के कारण

ISSN No. 2394-5990

किन्नर, 14 वर्ष तक वही रुक रहे। वनवास पूरा करके, राम वापस आते समय रास्ते में किन्नरों को देखकर उनकी प्रतीक्षा के बारे में पूछा। तब किन्नरों बताया कि

"जथा जोग करि विनय प्रनाम, बिदा किए सब सानुज रामा,
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे, सब सनमानी कृपानिधि फेरे।।"[3]
-रामचरितमानस अयोध्याखण्ड

राम, उनकी भक्ति से अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्हें वरदान दिया कि जिन्हें वे अपना आशीर्वाद देंगे, उसका कभी बुरा नहीं होगा। इसलिए शुभ अवसरों में लोग तृतीयलिंग का स्वागत करते हैं और उनकी इच्छानुसार धनराशि देकर विदा करते है।

मध्यकालीन में तृतीय लिंग :

मध्य कालीन राजाओं द्वारा कुछ नवयुवकों का यौन अंग काटकर, उन्हें हिजड़ा बना देते थे और उन्हें अपने रानियों के महल में पहरेदार बनाते थे। दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के सेनपति काफूर नामक हिजड़ा, अधिक प्रसिद्ध था। मुगल बादशाह जहांगीर के शासनकाल में ख्वाजासरा हिलाल और इफितयार खान नामक हिजड़े महत्वपूर्ण पदों पर रहते थे। मुगल शासन काल में बादशाहो के हरम में सैकड़ो बेगमें, रखैल, रानियॉ होती थी। उन सभी के साथ बादशाह यौन संबंध बनाने का समय नहीं होता था। हरम के इन शाही औरतें किसी दूसरे पुरुष से यौन संबंध बनाने से रोकने के लिए बादशाह द्वारा हिजड़ा पहरेदार रखे जाते थे। अंग्रेजी शासन काल में ब्रिटिश सरकार ने तृतीय लिंग के व्यक्तित्व, व्यवहार, हरकतें से आशंकित होकर उन्हें क्रिमिनल ट्राइब एक्ट और जरायम पेशा अपराध अधिनियम के अंतर्गत अपराधी बना दिया।

इक्कीसवीं सदी में तृतीय लिंग :

1947 भारत स्वतंत्र होने के बाद तृतीय लिंग को क्रमिनल ट्राइब एक्ट या जरायम पेशा जातियों की सूची से हटा दिया गया। हालांकि इनकी आजीविका में कोई सुधार नहीं हुआ। तृतीय लिंग अपना जीवन बिताने के लिए ट्रैन, बस या ट्रैफिक सिग्नल में भीख मांगकर या वेश्यावृत्ति करके उनके जीवन ज्ञापन करके के लिए मजबूर हो जाते है। सरकार द्वारा तृतीय लिंग की जीवन स्तर को सुधारने के लिए सबसे अनेक कदम तब से अब तक अनेक कदम उठाते आ रहे हैं और इसके लिए आवश्यक कानून भी बनाए हैं। भारत के संविधान के अनुच्छेद 14,15,19(1),21 में व्यक्ति को समान अवसर व अपने जीवन को गरीमा पूर्वक जीने की आजादी प्राप्त है। उच्चतम न्यायालय ने 15 अप्रैल 2014, में किन्नरों को तीसरे लिंग के रूप में कानूनी पहचान दिया।

तृतीय लिंग का योगदान :

आजकल तृतीय लिंग सिनेमा, भरतनाट्यम, पुलिस, लेखक, प्रोफेसर, डॉक्टर, वकील, जज, राजनीतिक नेता, पायलट, खेल आदि सभी क्षेत्रों में अपने प्रतिभा साबित कर रहे हैं। इस समाज की रूढ़िवादी, नफरत, उपेक्षित भावनाओं को तोड़कर तृतीय लिंग अपनी लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रहे हैं।

केरल के डॉ प्रिया भारत के प्रथम तृतीय लिंग डॉक्टर हैं। मोनिका दास भारत देश की पहली तृतीय लिंग बैंकर हैं। वे पटना के सिंडिकेट बैंक में क्लर्क पद पर अक्टूबर 2015 में ज्वाइन की थी। तमिलनाडु में जन्म नेघा.एस अपनी मलयालम फिल्म 'अंतरम' के लिए उक्त श्रेणी में डेब्यू अभिनेता का पुरस्कार जीतने वाली पहली ट्रांस वूमेन बन गई। मार्लिमा मुरलीधर तृतीय लिंग, 25 वर्षा से तृतीय लिंग समुदाय की बेहतरीन सेवा के लिए समाज कल्याण द्वारा उन्हें 2022 के 'सर्वश्रेष्ठ ट्रांसजेंडर पुरस्कार' प्राप्त हुआ। पश्चिम बंगाल के जोयिता मोंडल भारत की पहली तृतीय लिंग जज है। केरल के एडम हैरी देश की पहली तृतीय लिंग पायलट है। 2017 में नितिशा बिस्वास को भारत की पहली तृतीय लिंग ब्यूटी क्वीन हैं। सत्यश्री शर्मिला भारत की पहली तृतीय लिंग वकील के रूप में जून 2018 में नियुक्त हुई। जिया दास भारत की पहली तृतीय लिंग ऑपरेशन थियेटर टेक्निशियन के रूप में जून 2018 में नियुक्त हुई। एस्टर भारती भारत की पहली तृतीय लिंग पास्टर बनी।

केंद्र सरकार ने SMILE - Support for Marginalized Individuals for Livelihood and Enterprise नाम एप लॉन्च किया है। जिसमें तृतीय लिंग की कल्याण के लिए व्यापक पुनर्वास सहायता कार्यक्रम शामिल है। मानस फाउंडेशन, नाज फाउंडेशन, पायल फाऊंडेशन, हमसफर आदि सामाजिक संस्थाएं तृतीय लिंग के मुख्य धारा में लाने के लिए निरंतर प्रयत्नरत हैं। तमिलनाडु में कई संस्थाएं तृतीय लिंग अधिकारों के लिए काम कर रहे हैं, वे नुक्कड नाटक, रोजगार कार्यक्रम और जागरूकता गतिविधियों आदि कार्य में सफल भी हो रहे हैं। 'ब्रदर' नाम की संस्था समाज के विभिन्न तृतीय लिंग संगठन के साथ काम कर रहा है।

साहित्यकारों और तृतीय लिंग :

साहित्यकारों ने तृतीय लिंग के सामाजिक बहिष्कार, तिरस्कार, मानवीय पीड़ा आदि को अपने सशक्त लेखनी के

माध्यम से समाज के समक्ष लाने का बर्बस प्रयास किया है और कर रहे है। हिंदी साहित्य इतिहास में नीरजा माधव के 'यमदीप'(2002) तृतीय लिंग के संबंधित पहला उपन्यास है। चित्रा मुद्गल जी कृत 'पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा'(2016), प्रदीप सौरभ कृत 'तीसरी ताली'(2011), निर्मला भुराडिया कृत 'गुलाम मंडी'(2014), महेंद्र भीष्म जी कृत 'किन्नर कथा'(2012), 'मैं पायल'(2016), लता अग्रवाल कृत 'मंगलामुखी', भगवन्त अनमोल कृत 'जिंदगी 50-50'(2017) आदि उपन्यासों में तृतीय लिंग जीवन की अंतरतम गहराइयों की परिक्रमा करके उनके उदात्त मानवीय गुणों से परिचय कराता है। इन उपन्यासों में तृतीय लिंग की दैनिक जीवन में सामना करने वाले आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक समस्याओं पर प्रकाश डालने के प्रयास किया गया है।

''तमिलनाडु के डॉ. श्री देवी तथा वीणा के. वी. ने करीब 120 किन्नरों से संबंधित अलग-अलग पहलुओं पर अनुसंधान किया है। उनके शोध आलेख "Social Exclusive Have A Negative Impact On The Health Of Transgender' में किन्नरों की समस्याएं, शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधित अनेक पहलुओं को प्रस्तुत करने का सफ़ल प्रयास किया है।''[4]

शिवप्रसाद सिंह के बिंदा महाराज, महेंद्र भीष्म की त्रासदी, लवलेश दत्त के नेग, गरिमा संजय दूबे-पन्ना बा, पारस दासोत-गलती जो माफ नहीं, विजेंद्र प्रताप सिंह के संकल्प, पद्मा शर्मा के इज्जत के रहकर, अंजना वर्मा के कौन तार से बनी चदरिया, श्रीकृष्ण सैनी के हिजड़ा, किरन सिंह के साझा आदि कहानियाँ में तृतीय लिंग के समस्याओं, अवश्यकताओं और उनकी पीड़ाओं के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।

उपन्यास, नाटक, कविता, कहानी, आत्मकथा आदि विधाओं के माध्यम से साहित्यकार, हमें तृतीय लिंग की समस्याओं के प्रति सोचने और संवेदनशील होने के लिए प्रेरित करते हैं।

निष्कर्ष:

समाज का पूर्ण विकास तब तक नहीं हो सकता जब तक समाज के सभी वर्ग एव उपवर्ग का विकास न हो। तृतीय लिंग वर्ग समाज के शोषण, उत्पीड़न बहिष्कार का पात्र प्राचीन काल से आधुनिक काल तक बनता आया है। समाज इनके विकास के मार्ग हरेक काल बाधाओं उत्पन्न करती आई है। इसी कारण तृतीय लिंग वर्ग अब तक समाज में विकास पद पर आगे नहीं बढ़ पाए हैं। उनके इस रुकावट में सबसे बड़ा हाथ उनके परिवार, समुदाय एवं समाज का है। लेकिन तृतीय लिंग समुदाय इन सभी बाधाओं को तोड़कर, प्रगति के मार्ग में सशक्त आगे बढ़ रहे है। वे अपनी बुरी अवधारणा (लोगों के द्वारा बनाई गई) को तोड़ कर एक उन्मुक्त पक्षी की तरह क्षितिज की ओर उडान भर रहे हैं और समाज में अपने लिए एक नया स्थान स्थापित कर सके हैं।

संदर्भ सूची:

1. किन्नर साहित्य व्यथा, यतान और संघर्ष, डॉ. देव्यानी महिडा, रोशनी पब्लिकेशंस, कानपुर, द्वितीय संस्करण 2023, पृ. सं. 176
2. हिंदी कथा साहित्य में ट्रांसजेंड, डॉ अभिषेक सिंह, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2022,पृ. सं.16
3. हिंदी कथा साहित्य में ट्रांसजेंड, डॉ अभिषेक सिंह, विकास प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2022,पृ. सं.31
4. हिंदी कथा साहित्य में किन्नर समाज, डॉ.दिलीप मेहरा, माया प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2018,पृ. सं.75

■■■